युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 37 कुल पृष्ठ-8 27 अप्रैल से 3 मई, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 वै. कृ.-15

प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती जी की संन्यास दीक्षा के 45 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 16 अप्रैल, 2023 को भव्य समारोह का आयोजन

स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज आर्य जगत् के तपोनिष्ठ संन्यासी हैं – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती की संन्यास दीक्षा के 45 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 16 अप्रैल, 2023 को अमन पैलेस वर्कशॉप रोड, यमुनानगर में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के विश्वविख्यात संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष डॉ. आनन्द कुमार आई.पी.एस., अन्तर्राष्ट्रीय प्रचारक मेजर विजय आर्य, आर्य समाज राजपुरा के प्रधान श्री अशोक छावड़ा, श्री प्रताप चन्द भूटानी आर्य समाज गन्नौर, सत्यार्थ रत्न श्री सौरभ आर्य, श्री सुशील भाटिया, श्री चन्द्रकिरण वर्मा देहरादून, भाजपा के जिलाध्यक्ष श्री राजेश सपरा, श्री राकेश ग्रोवर मंत्री आर्य समाज बूढ़िया, श्रीमती शशि अग्रवाल पानीपत, श्रीमती प्रिया आर्या करनाल आदि के अतिरिक्त श्री सुमित्र देव अंगीरस आर्य भजनोपदेशक आदि विद्वान् कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातःकाल या से हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पद को आचार्य धर्मेन्द्र शास्त्री ने सुशोभित किया। यज्ञ के उपरान्त विधिवत रूप से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसका संयोजन विदुषी बहन नीरज नरूला ने बड़ी कुशलता के साथ किया। इस कार्यक्रम में स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज को आर्य रत्न सौरभ आर्य तथा स्वामी आर्यवेश जी के द्वारा शॉल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। उसके पश्चात् भण्टिडा, लुधियाना, राजपुरा, चण्डीगढ़, अम्बाला, गन्नौर, पानीपत, करनाल, नीलोखेड़ी, हनुमानगढ़, राजस्थान आदि स्थानों से पधारे आर्यजनों तथा माताओं ने स्वामी जी महाराज को शॉल एवं राशि देकर सम्मानित किया। श्री सौरभ आर्य ने सभी उपस्थित आर्यजनों को स्वच्छता, नशामुक्ति तथा पर्यावरण सुरक्षा का संकल्प दिलवाया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज को उनके संन्यास दीक्षा के 45 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अपनी शुभकामनाएं दी और बताया कि स्वामी सच्चिदानन्द जी आर्य जगत के एक कर्मठ, समर्पित एवं तपोनिष्ठ आर्य संन्यासी हैं। उन्होंने अपने संन्यास धर्म को अत्यन्त निष्ठा एवं संयम के साथ निभाया है। स्वामी सच्चिदानन्द जी ने यमुनानगर को अपना केन्द्र बनाकर पूरे राष्ट्र में वेद प्रचार की दुंदुभी बजाई है। वे साल में 9 महीने तक देश के विभिन्न भागों में जागकर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार एवं प्रसार करते हैं। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर उन्हें सम्मानित किया जाता है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि मेरा भी यह सौभाग्य है कि स्वामी सच्चिदानन्द जी का सान्निध्य एवं आशीर्वाद हमें प्राप्त है। उनके स्नेहपूर्ण निमंत्रण पर मैं पिछले कई वर्ष से वैदिक ज्ञान आश्रम के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने के लिए प्रतिवर्ष आता हूँ और स्वामी जी का मार्गदर्शन लेता हूं। ऐसे वीतराग तपोनिष्ठ संन्यासी के संन्यास दीक्षा के 45वें वर्ष पर आज हम सभी मिलकर उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य की कामना के लिए यहां एकत्रित हुए हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यजनों का आह्वान किया कि वे महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200 वी जन्म जयंती के अवसर पर यह संकल्प लें कि वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था को वे अपने जीवन में चरित्रार्थ करेंगे। जिस प्रकार से स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज ने संन्यास की दीक्षा लेकर तप का मार्ग अपनाया है उसी प्रकार सभी आर्यजनों को वानप्रस्थ एवं संन्यास की दीक्षा लेकर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि जब भारत के अन्दर वर्णाश्रम की व्यवस्था लागू थी तो भारत पूरे विश्व का गुरु कहलाता था, किन्तु जबसे वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था, पंच यज्ञ एवं अष्टांग योग, सोलह संस्कार एवं अध्यात्म का मार्ग भारतवासियों ने छोड़ दिया है तब से भारत पतन की ओर जा रहा है। अतः यह आवश्यक है कि हमें अपनी वैदिक परम्पराओं को फिर से स्थापित करना चाहिए और विश्वभर में प्रचारित एवं प्रसारित करना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से सम्बन्धित कई मार्मिक घटनाएं सुनाकर उपस्थित जनसमूह को प्रेरित किया और महर्षि के विचारों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए संकल्प दिलवाया। स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज ने उपस्थित आर्यजनों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर आर्य केन्द्रीय सभा यमुनानगर के प्रधान श्री महेन्द्र सिंघल, आर्य समाज रेलवे रोड यमुनानगर के प्रधान श्री मोहित आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के अन्तरंग सदस्य डॉ. बंसल, श्री संजीव नरूला, श्री ब्रह्मदत्त शास्त्री धर्माचार्य आर्य समाज राजपुरा आदि भी मंच पर उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में श्री सुमित्रदेव अंगीरस के भजनों का भी लोगों ने आनन्द लिया। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषिलंगर एवं ब्रह्मभोज की समुचित व्यवस्था की गई थी जिसमें सभी आर्यजनों ने प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

राजा शुद्ध स्वदेशी तथा दण्डनीय हो? (वेद तथा स्वामी दयानन्द)

- मनोहर विद्यालंकार

प्रत्येक देश अपने राष्ट्र को दैवीय विपत्तियों तथा मानवीय क्षतियों से सुरक्षित करके राष्ट्र संघ में प्रमुख स्थान प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। अपने देश में नैतिकता के स्तर को उन्नत करने के लिए संयम, सदाचार और कर्तव्य पालन की शिक्षा देकर, राष्ट्र को ऐश्वर्य सम्पन्न तथा प्रत्येक नागरिक की कल्याण कामना तथा शासन में भागीदारी को ध्यान में रखते हुए, जनतन्त्रात्मक शासन के रूप में फुलता फलता देखने की कामना करता है।

किन्तु जनतन्त्रात्मक शासन में प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों को महत्वपूर्ण मानकर उनका प्रसार करता है। परिणामतः राष्ट्र में पृथक-पृथक विचारधारा के अनेक गुट बन जाते हैं। उसके बाद प्रत्येक गुट अपनी विचारधारा को कार्यरूप में परिणत करने के लिए अपने दल के संगठन को दृढ़ और लोकप्रिय बनाने के लिए जी जान से परिश्रम करता है। इस प्रकार जो अनेक दल निर्मित होते हैं, वे अपने दल की उन्नति को सर्वोपरि मान लेते हैं। उनके लिए देश की उन्नति गौण और उपेक्षित हो जाती है।।

इसलिए देश की एकात्मता को कायम रखने के लिए, देश की प्रतिनिधि संस्थाओं के प्रमुख प्रतिनिधि संस्थाओं के प्रमुख प्रतिनिधि मिलकर कुछ नियम निर्धारित करते हैं, जिन्हें मानना सबके लिए अनिवार्य होता है।

इस दृष्टि से राष्ट्र में राजप्रमुख बनाने के लिए किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है- उनकी चर्चा करने वाला वेद मन्त्र क्या कहता है, वह देखते हैं। मन्त्र निम्न है- इदं देवा असपत्नं सुवध्वं महतेक्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय, महते आनराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममबुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रं अस्यै विश एषवोऽमी राजा सोमोऽरमाकं ब्राह्मणानां राजा।।

ऋषिः देववातः। देवता यजमानः। छन्दः ब्राह्मीत्रिष्टुप। यजुः 10-18

मन्त्र का शब्दार्थ करने से पूर्व कुछ शब्दों को समझना जरूरी है।

यह मन्त्र 'देवाः' को सम्बोधन करता है। ये देव कोई विशिष्ट शक्ति सम्पन्न व्यक्ति अथवा विजातीय लोग नहीं है, अपितु राष्ट्र का प्रत्येक मतदाता देव है, उसे राष्ट्र की चरमोन्नति को दृष्टि में रखकर अपना मत देना है। राष्ट्र को यदि वाह्य और आन्तर दोनों दृष्टियों से शत्रुविहीन बनाना है, तो राष्ट्र प्रमुख का निर्वाचन निर्विरोध करना चाहिए। (असपत्नम्)।

राष्ट्र के प्रमुख राजा, तथा तत्सम प्रमुख पदों पर अधिष्ठित होने वाले व्यक्ति के माता और पिता दोनों इस राष्ट्र की प्रजा (देशोत्पन्न व्यक्तिसमूह) का अंग होने चाहिए।

4. मन्त्र में आए 'ब्राह्मणानां राजा' का अर्थ उच्चतम न्यायालय के सदस्य तथा उनका प्रमुख सोम अर्थात् शान्ति और खुशी के स्वामी परमात्मा का प्रतिनिधि रूप राजा है। ये शासन के पदाधिकारियों के ऊपर है। वेद की दृष्टि में राज्य पालिका से न्याय पालिका कुछ अंशों में उच्च है। निर्वाचित लोकसभा भी उच्चतम न्यायालय के निर्णय को नहीं बदल सकती।

अर्थ - (देवाः) राष्ट्र को दिव्य बनाने की कामना वाले मतदाता नागरिकों! (इदं आसपत्नं सुवध्वम्) इस राष्ट्र को वाह्य और आभ्यन्तर शत्रुओं से विहीन बनाओ, ताकि हमारा राष्ट्र (महतेक्षत्राय) महान छात्र धर्म के विस्तार अर्थात् प्रजा की दैवीय तथा मानवीय क्षतियों से रक्षा अथवा पूर्ति करने में समर्थ हो, (महतेज्यैष्ठयाय) राष्ट्र समूह में महत्वपूर्ण बड़प्पन को प्राप्त करने में समर्थ हो (महते जानराज्याय) अपने राष्ट्र को महान् जनतन्त्र बनाने में समर्थ हो (इन्द्रस्य इन्द्रियाय) ऐश्वर्यशाली व्यक्ति की संयत शक्ति को प्राप्त करने में समर्थ हो। इसके लिए आवश्यक है कि (इमम्) ऐसे व्यक्ति को राजा (प्रमुख) बनाओ, जो व्यक्ति (अस्यै विशः) इस देश की प्रजा के (अमुष्य पुत्रम्) अमुक पिता का पुत्र तथा (अमुष्यै पुत्रम्) अमुक माता का पुत्र हो, (अभी) हे प्रजाओं! (एष वः राजा) यह आपका राजा=नियन्ता है। किन्तु (अस्माकं ब्राह्मणानां) हम जैसे आसक्तिरहित ब्रह्मर्षियों का राजा तो (सोमः) आनन्द और शान्ति का प्रदाता परमात्मा ही है।

निष्कर्ष :

(1) इस मन्त्र में राष्ट्र की आन्तर और वाह्य आक्रमण या प्रहार से रक्षा के निमित्त, स्वराष्ट्र को राष्ट्रसंघ में प्रमुखता प्राप्त करने के निमित्त, जनतान्त्रिक राज्य व्यवस्था को आदर्श बनाने के निमित्त तथा स्वराष्ट्र को आर्थिक दृष्टि से संयत दृष्टि को अपनाकर ऐश्वर्यशाली बनाकर अजात शत्रु बनाने के लिए कुछ उपाय सुझाए गए हैं।

(क) जहां तक सम्भव हो राजा का निर्वाचन निर्विरोध किया जाए।

(ख) राजा जो चुना जाए उसके माता व पिता राष्ट्र में जन्मी हुई प्रजा में से होने चाहिए।

(ग) राजा को वैदिक संस्कृति में यद्यपि परमात्मा का प्रतिनिधि रूप होने से सर्वोपरि माना गया है। फिर भी ब्राह्मणों ब्रह्मर्षियों को उससे उच्च स्थान प्राप्त हैं। वसिष्ठ और व्यास जैसे महर्षियों के निर्देश उनके लिए आदेश माने गए हैं।

(2) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तीन पालिकाएं (संविधान, कार्य, न्याय बन गई हैं। इसलिए संविधान पालिका का अध्यक्ष=संसद, का सभापति, न्यायपालिका का अध्यक्ष=सर्वोच्च न्यायालय का प्रमुख, तथा कार्यपालिका (सेना़आरक्षि) के प्रमुख राष्ट्रपति को भी राजा समझना चाहिए। और इन चारों की नियुक्ति या निर्वाचन में क और ख दोनों धाराएं लागू होगी।

(3) इन चारों की समिति के बहुमत को सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को भी परिवर्तित करने का अधिकार दिया जाना चाहिए। केवल संसद और राज्य सभा मिलकर भी सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को बदलने में सक्षम नहीं हो सकते।

(4) राष्ट्रपति, संसद सभापति, उपराष्ट्रपति और सर्वोच्च न्यायमूर्ति की समिति ब्रह्मर्षि सभा कहलायेगी। यह समिति सार्वकालिक नहीं होगी। आपातकाल में एक मास के नोटिस पर इसे बुलाया जा सकेगा, और इसे एक सप्ताह में निर्णय दे देना होगा।

(क) प्रथम निष्कर्ष का कारण है कि विदेशी पिता या विदेशी माता की सन्तान राष्ट्र के लिए सम्पूर्ण रूप में समर्पित नहीं हो सकती।

(ख) तृतीय निष्कर्ष का कारण है कि सर्वाधिकार सम्पन्न स्वतन्त्र संस्थाएं परस्पर न झगड़ने लगें।

(ग) सामान्यतया सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय अनुल्लंघनीय और सर्वमान्य होगा।

स्वामी दयानन्द की राजा के सम्बन्ध में विशिष्ट उक्तियां

(1) स्वामी दयानन्द ने अपने यजुर्वेद भाष्य के नवम अध्याय के मन्त्र संख्या 48 के भावार्थ में सभाध्यक्ष राजा के लिए जो गुण लिखे उन्हें पूरा करने वाला व्यक्ति मिलना तो इस युग में असम्भव प्रतीत होता है। इसलिए हमें उसके पिता माता को राष्ट्र में प्रसूत होना अनिवार्य करना ही चाहिए।

हे राजप्रजांजनाः! यो विद्वद्भ्यां मातापितृभ्यां सुशिक्षितः कुलीनो महागुण कर्म स्वभावो जितेन्द्रियत्वा दिगुणयुक्तः सविताऽष्टाचत्वारिशद् वर्ष ब्रह्मचर्य विधासुशिक्षः पूर्णशरीरात्मबलः प्रजापालनप्रियो विद्वान् अस्ति सं सभाध्यक्षं राजानं कृत्वा साम्राज्यं सेवध्वम्।

हे राजशासन और प्रजा के मनुष्यों! तुम ऐसे व्यक्ति को जो विद्वान माता पिता के द्वारा सुशिक्षित, कुलीन, उत्तम गुण कर्म स्वभाव युक्त, जितेन्द्रियादि गुण सम्पन्न, 48 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या प्राप्त करके सुशील, शरीर और आत्मा के बल से युक्त, स्वभाव से प्रजापालन प्रिय तथा विद्वान हो सर्वोपरिसभा का अध्यक्ष राजा बनाकर साम्राज्य का सेवन करो।

(2) स्वामी दयानन्द राजा को भी अदण्डनीय नहीं मानते। वे यजुः 8-23 के भावार्थ में लिखते हैं - कथंचिद् यदि राजा दुष्कर्मकृत्स्यात्तर्हि प्रजा यथापराधं राजानं दण्डयेत् राजा च प्रजापुरुषम्, कदाप्यपराधिनं दण्डेन बिना न त्यजेत्। अर्थः- यदि राजा भी दुष्कर्म करे तो प्रजा राजा को अपराध के अनुसार दण्ड देवे, और राजा प्रजा के पुरुषों को, अपराधी को दण्ड दिए बिना कभी न छोड़ें।

अर्थ-पोषण असपत्नम्= अ़सपत्नम्-निर्विरोध तथा शत्रुविहीन, देवाः दिवु क्रीडाविजिगोषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु। सुवध्वम्- बू प्रेरणे- प्रयन्त करो, सु प्रसवैश्वर्ययोः-ऐश्वर्य सम्पन्न बनाओ, क्षत्राय-क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्यशब्दो भुवनेषुरूढः। कालिदास महते-महपूजायाम्-पूजनीय, ज्येष्ठचाय-प्रमुखपद प्राप्तये, जानराज्याय - जनानां राज्यं शासनं जन राज्यम् - तेभ्यांहिताय रेव शासितं राज्यं - स्वार्थेऽण्= जानराज्यम्। इन्द्रः - जितेन्द्रियत्वात् शत्रून पराजित्य ऐश्वर्यशाली। इन्द्रियाय - इन्द्रस्यसामर्थ्य प्राप्तये। सोमः शान्त स्वरूपः आनन्दमयः आनन्द प्रदश्च।

ब्राह्मणाः ब्रह्म ईश्वरो वेदस्तत्वं तपोवा, तदधीतेत द्वेद करोति च।

- श्याम सुन्दर राधे श्याम
522, कटरा ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-6

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन
भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन – पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये
बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2
दूरभाष :- 011-42415359, 23274771

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जोधपुर

दिनांक : 26, 27 व 28 मई, 2023 के लिए

आर्य जनता से हार्दिक अपील

सम्माननीय आर्यजन!

जैसा कि आप सभी को विदित है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्म शताब्दी 2024 में आ रही है। ऋषि दयानन्द जी की दूसरी जन्मशती को पूरे विश्व में ऐतिहासिक रूप में मनाने के लिए प्रत्येक आर्य उत्साहित है। इस उपलक्ष्य में आगामी 26, 27 एवं 28 मई, 2023 (शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार) को जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, आर्य वीरदल राजस्थान तथा आर्य वीरदल जोधपुर के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इस महासम्मेलन में देश के विभिन्न भागों में हजारों की संख्या में आर्य भाई–बहन और युवक/युवतियां भाग लेने के लिए तैयारी कर रहे हैं। समय अब कम रह गया है। अतः आप सभी को जोधपुर आने की तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिए। जो आर्यजन जोधपुर के सम्मेलन में सम्मिलित होना चाहते हैं वे कृपया अपने आने की सूचना अवश्य ही देने का कष्ट करें कि वे कब और कितनी संख्या में जोधपुर पहुंचेंगे, ताकि आप सभी के भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था की जा सके। देश के अन्य प्रान्तों से आने वाले आर्यजनों को अभी से अपनी रेल या हवाई जहाज आदि से आने के लिए टिकट बुक करा लेनी चाहिए ताकि बाद में असुविधा न हो।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, जोधुपर के इस विशाल आयोजन पर लाखों रुपया व्यय होना है जो आप सभी के पवित्र सहयोग से ही पूरा हो सकेगा। अतः हमारी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप स्वयं अपनी ओर से तथा अपने अन्य मित्रों व सहयोगियों को प्रेरित करके अधिक से अधिक दान राशि आप निम्नलिखित बैंक खाते में या महासम्मेलन के कार्यालय के पते पर बैंक ड्राफ्ट, चैक आदि से भिजवाने की कृपा करें। आपके इस पवित्र दान से यह महायज्ञ तथा महासम्मेलन निश्चित रूप से ऐतिहासिक होगा। जोधुपर को आपके स्वागत में ओ३म् झण्डों तथा ओ३म् की लड़ियों, बैनरों तथा झण्डों से सजाया जा रहा है और आयोजन समिति आपके आव भगत एवं व्यवस्था के लिए दिन–रात परिश्रम कर रही है। हमें पूरा विश्वास है कि आर्यजन दल–बल सहित सम्मेलन में पधारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अपनी श्रद्धा एवं निष्ठा का परिचय देंगे। आप किसी भी जानकारी के लिए निम्नलिखित पते पर या दूरभाष पर सम्पर्क कर सकते हैं।

जोधपुर के बाहर से आने वाले आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अपने साथियों सहित पधारने की संख्या के बारे में 15 अप्रेल, 2023 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन, आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सकें | सम्पर्क :- भंवरलाल आर्य-9414476888, जितेन्द्रसिंह-9828129655, हरिसिंह आर्य-9413957390

इस ऐतिहासिक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित हैं, कृपया दान राशि आर्य प्रतिनिधि सभा समिति (पंजीकृत) जोधपुर के नाम से क्रॉस चैक/मनी ऑर्डर/ड्राफ्ट/ऑनलाईन भिजवाने का कष्ट करें अथवा संस्था द्वारा संचालित खाते में सीधे ऑन लाईन के माध्यम से भिजवा कर सूचित करने का कष्ट करें जिससे रसीद शीघ्र आपको भेजी जा सके। खाते का विवरण निम्न प्रकार है - यूको बैंक खाता संख्या A/C - 00860110015582 IFSC Code : UCBA0002244 सहयोग राशि प्राप्त होने के बाद रसीद आपको भेज दी जायेगी।

स्वामी आर्यवेश
अध्यक्ष, आर्य महासम्मेलन

प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री, सार्वदेशिक सभा

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा

स्वामी आदित्यवेश
मुख्य संयोजक, आर्य महासम्मेलन

श्री बिरजानन्द एडवोकेट
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

श्री कमलेश शर्मा
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

श्री भंवर लाल आर्य
अधिष्ठाता आर्य वीरदल राजस्थान

श्री हरि सिंह आर्य
अध्यक्ष, आर्य वीरदल जोधपुर

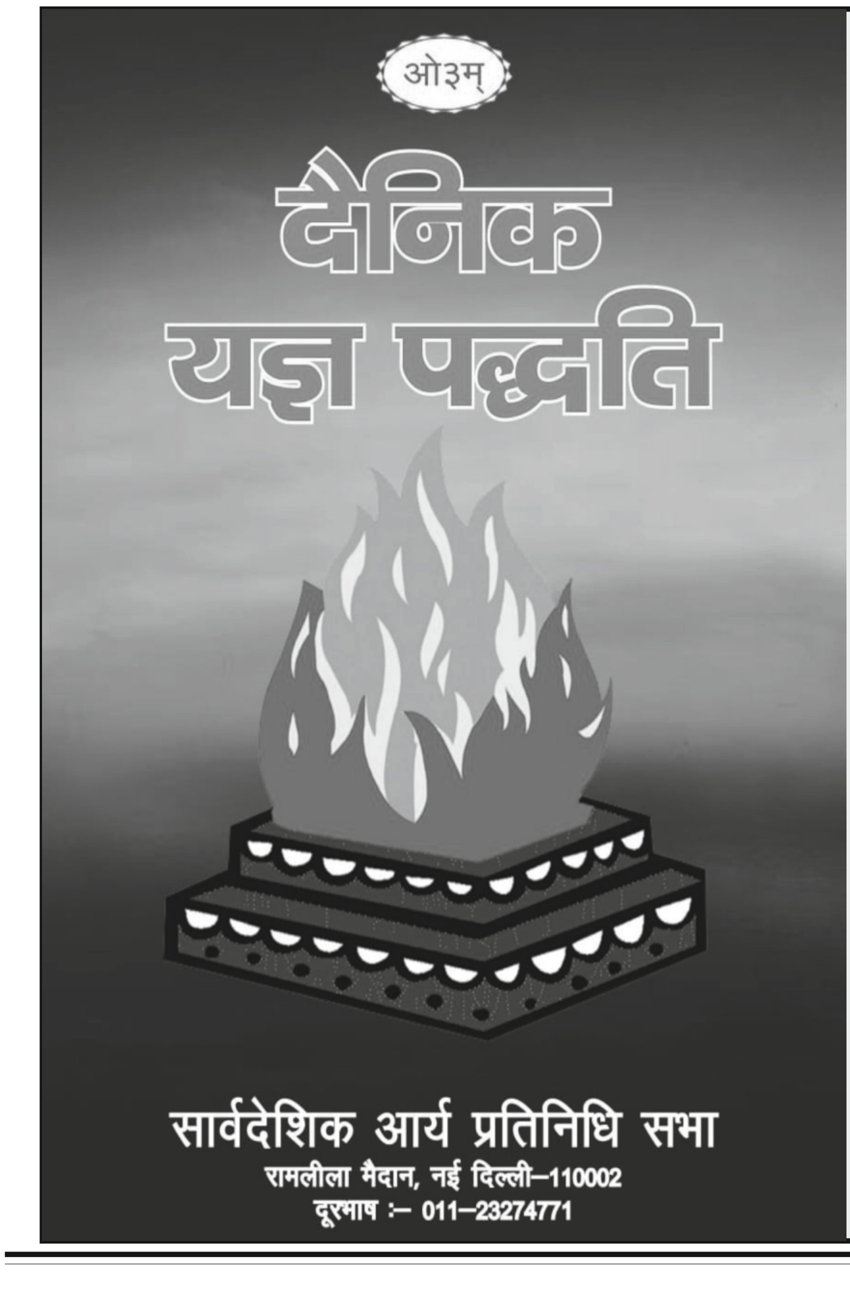
ओ३म्
दैनिक यज्ञ पद्धति
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्‌यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी संन्यासी पूज्य स्वामी रत्नदेव जी महाराज की 27वीं पुण्य तिथि के अवसर पर कन्या गुरुकुल खरल, जिला–जीन्द में भव्य कार्यक्रम का हुआ आयोजन

स्वामी रत्नदेव जी आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी थे – स्वामी आर्यवेश

भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय के रीजनल सेंटर कन्या गुरुकुल खरल, जिला–जीन्द में स्वामी रत्नदेव जी की 27वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय की रजिस्ट्रार नीलम मलिक ने कहा कि मानव के निर्माण में माँ का योगदान सबसे बड़ा होता है। क्योंकि माता निर्माता भवति की उक्ति इस देश में सदियों से प्रचलित है। उन्होंने कहा कि आज माँ को भी अपनी जिम्मेदारी को समझने की जरूरत है। माँ जितनी सावधानी से बच्चे की परवरिश करेगी, समाज के नवनिर्माण में उतना ही बड़ा योगदान दे सकेगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे दिल्ली से पधारे आर्य समाज के नेता स्वामी आर्यवेश जी कहा कि संस्कृति प्रधान देश को राष्ट्रभक्ति की भावना को और ज्यादा अपनाना होगा। क्योंकि राष्ट्र को जिस दिन सब लोग प्राथमिकता देंगे उस दिन आपसी भेदभाव जैसी समस्यायों का समाधान हो जायेगा। उन्होंने आगे कहा कि बच्चे समाज का आईना होते हैं। वे जैसा देखते हैं वैसा ही करना शुरू कर देते हैं। हम जिस तरह की चर्चा बच्चों के सामने करते हैं बच्चे उसको गंभीरता से देखते भी हैं व सीखते भी हैं। बच्चों को सिर्फ अच्छे व सकारात्मक विचार ही दें। इससे न सिर्फ परिवार का बल्कि समाज व राष्ट्र का भी भविष्य उज्जवल होगा। अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने जहां स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की वहीं उनके कुछ संस्मरण भी जनसमूह के समक्ष प्रस्तुत किये। स्वामी जी ने बताया कि स्वामी रत्नदेव जी युवा अवस्था में एक श्रेष्ठ खिलाड़ी भी थे और खेल की भावना से ही वे समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करने में सफल रहे। उन्होंने लड़कों के लिए गुरुकुल कुम्भाखेड़ा, जिला–हिसार में गुरुकुल स्थापित किया और लड़कियों के लिए कन्या गुरुकुल खरल जहां हम आज का यह समारोह मना रहे हैं इसकी स्थापना की। स्वामी रत्नदेव जी को इन संस्थाओं को बनाने तथा चलाने में बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ा। उस जमाने में लोगों के पास धन एवं साधनों का अभाव था। अतः स्वामी जी महाराज ने जनता के समक्ष झोली फैलाकर और घर–घर घूमकर दान एकत्रित किया और इन दोनों संस्थाओं को खड़ा किया। उनके द्वारा आरोपित इन दोनों गुरुकुलों के पौधों को आज हम विशाल वट वृक्ष के रूप में देख रहे हैं। आज वातावरण बदला हुआ है। जब इस कन्या गुरुकुल खरल की स्थापना स्वामी रत्नदेव जी ने की थी तब लोग अपनी कन्याओं को गुरुकुल में भेजने के लिए तैयार नहीं थे, किन्तु स्वामी जी ने अपने परिचित जनों के घरों से 5 कन्याओं को सर्वप्रथम यहां दाखिला दिलाकर पढ़ाना शुरू किया और धीरे–धीरे वह संख्या 5 हजार तक चली गई। उनके इस प्रयास को सफलता के चरम तक ले जाने में सर्वाधिक योगदान गुरुकुल की संस्थापक आचार्या डॉ. दर्शना जी की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है। इन्होंने स्वामी जी के भार को अपने कंधों पर लेकर इस गुरुकुल को आज इस शिखर तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वामी रत्नदेव जी आर्य समाज के एक तपोनिष्ठ संन्यासी थे। उन्होंने शराबबन्दी के लिए दिन–रात कार्य किया। विविध सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध वेद प्रचार की धूम मचाई और लोगों को संगठित किया। स्वामी रत्नदेव जी का नाम आर्य समाज के उन तपस्वी संन्यासियों में आता है जो भविष्य में सदैव याद किये जायेंगे।

डॉक्टर दर्शना आचार्या ने कहा कि समाज की मानसिकता को बदलने में आर्य समाज का अहम योगदान है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने महिलाओं की सबसे ज्यादा वकालत की। उन्होंने महिलाओं को पढ़ने का अधिकार दिलवाया। विधवा पुनर्विवाह को प्रारंभ करवाया, बाल विवाह, देवदासी प्रथा, सती प्रथा, छुआछूत जैसी बुराईयों को जड़ से खत्म करने के लिए पूरे समाज को झकझोर दिया था।

विख्यात भजनोपदेशिका बहन कल्याणी आर्या ने कहा कि आज के कार्यक्रम को देखकर मैं यह कह सकती हूं कि जिनकी आचार्या इतनी सशक्त हैं उनकी बेटियों के विकास में कोई बाधा नहीं आ सकती। निश्चित रूप से वे बड़ी से बड़ी सफलता हासिल कर सकती हैं। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. अजीत सहित अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का संचालन श्री दिलबाग सिंह शास्त्री ने बड़ी कुशलता से किया। कार्यक्रम का शुभारंभ यज्ञ के साथ हुआ उसके बाद गीत एवं प्रवचन प्रारंभ हुए। इस अवसर पर बेटियों ने भव्य योग प्रदर्शन भी दिखाया। जिसकी सभी दर्शकों ने तालियां बजाकर स्वागत किया। इस अवसर पर उपप्रधान जिले सिंह, गांव के सरपंच महोदय, गुरुकुल खरल की 25 वर्ष पहले की स्नातिकाएं भी उपस्थित रही।

डॉ. धीरजपाल सिंह जी की प्रथम पुण्य तिथि पर भंवर भवन, बड़ौत, जिला–बागपत (उ. प्र.) में हुआ शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा

स्व. डॉ. धीरजपाल सिंह जो लम्बे समय से अमेरिका में सेवारत थे। गत वर्ष उनका असामयिक निधन हो गया था। मूल रूप से डॉ. धीरजपाल सिंह ग्राम–कंडेरा, तह.–बड़ौत के रहने वाले थे। उनके छोटे भाई श्री सुरेशपाल सिंह जो अमेरिका के शिकागो शहर में सपरिवार लम्बे समय से रह रहे हैं। उन्होंने 25 अप्रैल, 2023 को बड़ौत स्थित अपने निवास स्थान भंवर भवन में अपने पूज्य भ्राता डॉ. धीरजपाल सिंह जी की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर शांति यज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ में मुख्यरूप से आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, विश्वविख्यात विद्वान् श्री धर्मपाल शास्त्री जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट, गुरुकुल मैनेजमेंट इन्द्रप्रस्थ कमेटी के सदस्य श्री रामनिवास जी, श्री धर्मेन्द्र आर्य छपरौली, श्री विक्रम सिंह आर्य आदर्श नंगला, श्री रणवीर सिंह आदर्श नंगला आदि के अतिरिक्त पूर्व मंत्री एवं क्षेत्र के प्रसिद्ध नेता श्री ओमवीर तोमर, पूर्व मंत्री श्री साहिब सिंह, श्री भोपाल सिंह तथा डॉ. धीरजपाल सिंह जी के शिक्षा गुरु श्री जय प्रकाश जी आदि प्रमुख लोग उपस्थित थे।

स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ को बड़ी कुशलता के साथ सम्पन्न कराया। यज्ञ में श्री सुरेश पाल सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मंजू यजमान के रूप में उपस्थित थे। उनके अतिरिक्त परिवार के अन्य सभी सदस्य, सम्बन्धीगण तथा क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोग बड़ी संख्या में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ और उन्होंने डॉ. धीरजपाल सिंह जी के गुणों से प्रेरणा लेने के लिए उपस्थित लोगों को प्रेरित किया। उनके अतिरिक्त श्री धर्मपाल शास्त्री व अन्य नेताओं ने भी स्व. डॉ. धीरजपाल सिंह जी को श्रद्धांजलि दी।

अमेरिका स्थित डॉ. धीरजपाल सिंह जी के परिवारजन मुख्यरूप से उनकी धर्मपत्नी श्री सुरेशापाल सिंह और उनके बड़े सुपुत्र श्री भरत आदि ने कार्यक्रम को फेसबुक पर लाईव देखा। स्वामी आर्यवेश जी ने फेसबुक के माध्यम से भी अपना व्याख्यान अमेरिका में इस कार्यक्रम से जुड़े हुए सभी परिवारजनों को सुनाया। डॉ. धीरजपाल सिंह जी की पत्नी स्वामी जी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन शांति पाठ के साथ हुआ और मुख्य यजमान श्री सुरेशपाल सिंह जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

|| ओ३म् ||

ओ३म्
200 वीं
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
महर्षि दयानन्द सरस्वती
जयन्ती
1824-2024

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

की

200 वीं

1824-2024

जन्म जयन्ती वर्ष एवं 31 मई, 1883 को जोधपुर आगमन व प्रवास के उपलक्ष में
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्य वीर दल राजस्थान के तत्वावधान में जोधपुर (राज.) में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 26, 27, 28 मई 2023 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

स्थान : रेलवे सामुदायिक भवन, डी-6-A-B, भैरू चौराहा, भगत की कोठी रोड़, जोधपुर (राज.)

अध्यक्षता
स्वामी आर्यवेश
नेता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

समन्वयक
प्रो. विट्ठलराव आर्य
मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

सान्निध्य
पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में देश-विदेश के विद्वानों, आर्य सन्यासियों, आचार्यो, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों, आर्यवीरों, आर्य विरांगनाओं, आर्य नेताओं एवं राजनेताओं की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी | आप सभी से प्रार्थना है कि आप अधिक से अधिक संख्या में जोधपुर पहुँचकर इस आर्य महासम्मेलन में शामिल होवें तथा आर्य समाज की संगठन शक्ति का परिचय देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें ।

जोधपुर के बाहर से आने वाले आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अपने साथियों सहित पधारने की संख्या के बारे में 15 अप्रेल, 2023 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन, आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सकें | सम्पर्क :- भंवरलाल आर्य-9414476888, जितेन्द्रसिंह-9828129655, हरिसिंह आर्य-9413957390

इस ऐतिहासिक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित हैं, कृपया दान राशि आर्य प्रतिनिधि सभा समिति (पंजीकृत) जोधपुर के नाम से क्रॉस चैक/मनी ऑर्डर/ड्राफ्ट/ऑनलाईन भिजवाने का कष्ट करें अथवा संस्था द्वारा संचालित खाते में सीधे ऑन लाईन के माध्यम से भिजवा कर सूचित करने का कष्ट करें जिससे रसीद शीघ्र आपको भेजी जा सके| खाते का विवरण निम्न प्रकार है - यूको बैंक खाता संख्या A/C - 00860110015582 IFSC Code : UCBA0002244 सहयोग राशि प्राप्त होने के बाद रसीद आपको भेज दी जायेगी |

निवेदक

बिरजानन्द एडवोकेट	कमलेश शर्मा	भंवरलाल आर्य	चाँदमल आर्य	जितेन्द्रसिंह	हरिसिंह आर्य	दीपकसिंह पंवार	स्वामी आदित्यवेश
प्रधान	मंत्री	समन्वयक/अधिष्ठाता/संचालक	अध्यक्ष	महामंत्री	अध्यक्ष	समाजसेवी	संयोजक
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	आर्य वीर दल राजस्थान	आर्य वीर दल राजस्थान	आर्य वीर दल राजस्थान	आर्य वीर दल जोधपुर	आर्य समाज जोधपुर	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
9001304100	9460066557	9414476888	9413844743	9828129655	9413957390	9414134716	7015259713

आयोजन समिति :- जोधपुर - सर्वश्री नारायणसिंह आर्य, भंवरलाल हठवाल, गजेसिंह भाटी, पृथ्वीसिंह भाटी, रोशनलाल आर्य, शिवप्रकाश सोनी, सौभागसिंह चौहान, डॉ. लक्ष्मणसिंह आर्य, विनोद गहलोत मदनगोपाल आर्य, उम्मेदसिंह आर्य, पूनमसिंह शेखावत, विनोद आचार्य, हेमन्त शर्मा, वीरूमल आर्य, हनुमानप्रसाद गौड़, कमलेश सांखला, विक्रमसिंह आर्य, महेश आर्य, गणपतसिंह आर्य, जतनसिंह भाटी विकास आर्य, द्वारकादास आर्य, अशोक आर्य, जयनारायण आर्य, इन्द्रसिंह, राजेश देवड़ा (आर्य), जयदीपसिंह आर्य, भंवरलाल बिंवाल, अमृतलाल, भरतकुमार नवल, अभिषेक गहलोत, गुलाबचन्द आर्य मनोजकुमार परिहार, विरेन्द्र मेहता, चैनाराम आर्य, किशोरसिंह, कुलदीपसिंह सोलंकी, जयपुर :- ओमप्रकाश वर्मा, पुरूषोत्तमदास, शंकरलाल शर्मा, कृष्णचन्द शर्मा, श्रीमती मृदला सामवेदी, नाथुलाल शर्मा बलदेवराज आर्य, विकास आर्य, जितेन्द्र हरितवाल, अनिल शर्मा, पवन एडवोकेट, जालोर :- दलपतसिंह आर्य, कृष्णकुमार तिवारी, प्रशान्तसिंह, शिवदत्त आर्य, विनोद आर्य, कान्तिलाल आर्य अम्बिकाप्रसाद तिवारी, वरूण शर्मा, छगन आर्य, जगदीश आर्य, मोहनलाल भादरू, छगननाथ, गणपत आर्य, कन्हैयालाल मिश्रा, भरत मेघवाल, शिवगंज सिरोही :- हरदेव आर्य, जितेन्द्रसिंह आर्य जीवाराम आर्य, बनवारीलाल अग्रवाल, सुरेश मित्तल, दिनेश आर्य, नवरत्न आर्य, पुरूषोत्तम आर्य, मदन आर्य, कानाराम चौहान, देवाराम चौहान, पाली :- धनराज आर्य, दिलीप कुमार परिहार, मघाराम विजयराज आर्य, कुन्दन आर्य, देवेन्द्र मेवाड़ा, महेन्द्र प्रजापत, वासुदेव शर्मा, दिलीप गहलोत, गणपत भदोरिया, घेवरचन्द आर्य, हीरालाल आर्य, गजेन्द्र अरोड़ा, बालोतरा :- राजेन्द्र गहलोत अचलचन्द गहलोत, गोविन्दराम परिहार, मंगलाराम पंवार, बागाराम पंवार, लक्ष्मणलाल कच्छवाह, मांगीलाल पंवार, लूणचन्द चौहान, गणपतलाल गहलोत, दिलीप गहलोत, जितेन्द्र गहलोत, नरेश पंवार रामचन्द्र कच्छवाह, ओमप्रकाश आर्य, अरविन्द पुरोहित, अलवर :- धर्मवीर आर्य, वैद्य सुल्तानसिंह, कैलाश कर्मठ, मास्टर हरिसिंह आर्य, नरेन्द्र शर्मा, रामानन्द आर्य, ललित यादव, मीरसिंह आर्य अजमेर :- डॉ. गोपाल बाहेती, गोविन्द शर्मा, गणेश वैष्णव, सत्यनारायण शर्मा, किशनकुमार वैष्णव, सवाईमाधोपुर :- ओमप्रकाश आर्य, गिरधारसिंह एडवोकेट, अंकित जैन, कोटा :- देवप्रकाश मिश्रा शिवनारायण उपाध्याय, रघुवीरसिंह कच्छवाह, राजेन्द्रसिंह पावटा, भरत कुशवाह, इन्द्रकुमार सक्सैना, भरतपुर/दौसा :- अन्नतराम आर्य, विनोद कुमार, गिरीराज प्रसाद शर्मा, पं. राकेश आर्य, सुनील शर्मा

आयोजक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं आर्य वीर दल राजस्थान

कार्यालय : आर्य समाज, पाबूपुरा, गौरव पथ, नागरिक हवाई अड्डा रोड़, जोधपुर-342015 (राज.)

हरियाणा प्रांतीय आर्य सम्मेलन जीन्द में सम्पन्न

युवा पीढ़ी को महर्षि दयानन्द की विचारधारा से प्रेरित किया जाएगा – अनिल आर्य

जींद, सोमवार 3 अप्रैल 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद हरियाणा के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में ”हरियाणा प्रांतीय आर्य सम्मेलन” मोती लाल नेहरू स्कूल अर्बन एस्टेट जींद में सोल्लास संपन्न हुआ। सम्मेलन में हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों से आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर परिषद् देश भर में युवाओं को स्वामी जी की विचारधारा से जोड़ने के लिए अभियान चलायेगी। आगामी ग्रीष्मावकाश में अनेकों युवा चरित्र निर्माण शिविर लगाए जायेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महान क्रांतिकारी थे। उन्होंने वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया और लोगों की सोचने की दिशा ही बदल डाली। उन्होंने तर्क की कसौटी पर हर चीज को कसा। उनसे प्रेरणा लेकर हज़ारों नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। आज उनके जीवन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी का संदेश आम जन तक पहुचाने का आह्वान किया।

अपने विचार रखते हुए विधायक श्री कृष्ण मीणा ने कहा कि आधुनिक युग की महान विभूति महर्षि दयानंद जी द्वारा स्थापित आर्य समाज का योगदान देश की आजादी में सर्वाधिक था, उन्होंने भारतवर्ष की धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय बुराइयों को दूर करने के लिए जो अजेय शक्ति के प्रभाव से सुधारात्मक कार्य किए उनको मानव जाति चिरस्मरणीय रखेगी।

जिला अध्यक्ष श्री कृष्ण दहिया ने कहा कि महर्षि दयानंद जी ने जो कुछ जाना था या सुना था उसको सत्य की कसौटी पर परखा, इसलिए उनका ज्ञान उच्च कोटि का था। हमने ऐसे महापुरुष के जीवन से बहुत कुछ सीखना चाहिए।

श्री राजीव जैन, सोनीपत (पूर्व मीडिया प्रभारी मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार) ने कहा कि ऐसे महापुरुष के जीवन से हम सबको प्रेरणा लेकर समाज और राष्ट्र के लिए कार्य करना चाहिए। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने समाज को गुरुकुल वैदिक शिक्षा पद्धति दी जो हमारी भारतीय संस्कृति के लिए अति आवश्यक है। मैं ऐसे महापुरुष को प्रणाम करता हूं और मैं निरंतर सत्यार्थ प्रकाश भी पढ़ता हूं।

बहादुरगढ़ के जिला अध्यक्ष श्री हरिओम दलाल ने कहा की आर्य समाज के लिए मैं सर्वदा तत्पर रहता हूं।

सरदार गुरविंदर सिंह संधू (प्रधान बाजरा खाप पंचायत जींद) ने ध्वजारोहण करते हुए ओ३म् ध्वज का गुणगान करते हुए व्याख्या की।

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के प्रधान आनंद सिंह आर्य ने कहा कि युवा ही देश की संस्कृति और व्यवहार में बदलाव ला सकते हैं आज पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ावा निरंतर हो रहा है, इनसे बचना चाहिए और सामान्य जीवन निर्वहन करना चाहिए।

श्री ईश आर्य पतंजलि, हिसार ने बताया की योग की देन भी महर्षि दयानंद सरस्वती की ही है। उन्होंने योगसूत्र से अपने जीवन को उज्जवल बनाकर समाज का मार्गदर्शन किया।

सम्मेलन में मुक्ष्य रूप से सर्वश्री सूर्य देव आर्य, विद्या सागर शास्त्री, योगेन्द्र शास्त्री, वीरेंद्र आर्य, सीताराम आर्य, डॉ. सौरभ आर्य यमुनानगर, वीरेंद्र योगाचार्य, अशोक शास्त्री, सुब सिंह आर्य, स्वामी सच्चिदानंद, स्वामी रामवेश, स्वामी धर्मदेव, अजय आर्य, रामकुमार आर्य, अरुण आर्य, पिंकी आर्य, अशोक जांगिड़, नसीब सिंह आर्य महेन्द्रगढ़ आदि उपस्थित थे।

प्रान्तीय अध्यक्ष श्री स्वतंत्र कुकरेजा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में ‘अध्यात्म पथ’ द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम सम्पन्न

गायत्री मंत्र का संदेश गुनगुनाते हुए जियो जीवन – डॉ अमरजीत शास्त्री (अमेरिका)

बुद्धि की शुद्धि का मंत्र है गायत्री मंत्र – आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के पावन सानिध्य में 16 अप्रैल, 2023 को ब–2, केशवपुरम दिल्ली में विश्व कल्याण गायत्री महायज्ञ, विराट भजन संध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य शिवनारायण शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में गायत्री यज्ञ से हुआ, जिसमें देश–विदेश से अनेक यजमानों ने आहुति देकर पुण्य प्राप्त किया।

अमेरिका से पधारे डॉ. अमरजीत शास्त्री के प्रेरक उद्बोधन ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। तत्पश्चात परोपकारिणी सभा अजमेर के प्रधान श्री सत्यानंद आर्य जी ने ध्वजारोहण करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

श्रीमती कविता आर्या ने अपने साथियों के सहयोग से मधुर भजन प्रस्तुत करके सभागार को संगीतमय बना दिया। श्री विनय शुक्ला विनम्र एवं दर्शनाचार्या विमलेश बंसल के राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत काव्यपाठ का सभी ने भरपूर आनंद लिया।

योगाचार्य श्री कृष्ण कुमार गर्ग जी के योगासनों को देखकर आर्यजन हतप्रभ रह गए।

विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य के लिए वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी, श्री यशपाल आर्य जी तथा 21 महिलाओं को आर्य महिला गौरव सम्मान से सम्मानित करके उत्साहवर्धन किया गया। श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय की छात्रा अंकिता चौधरी को विश्व विद्यालय की वार्षिक परीक्षाओं में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर मेधावी छात्रा सम्मान से सम्मानित किया गया। छोटे से बच्चे अथर्व ने सायंकालीन मंत्र अर्थ सहित सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। निरंतर 17 वर्षों से प्रकाशित ‘अध्यात्म पथ’ के विशेषांक का विमोचन एवं निशुल्क वितरण किया गया।

इस समारोह में स्वामी सुखदेव आर्य तपस्वी, श्रीमती सरोजिनी जौहर (कनाडा), श्री यशपाल आर्य, श्री अशोक सुनेजा, श्री ओम सपरा, श्री अजय चौधरी, श्री अमरनाथ टक्कर, श्री सतीश आर्य, श्री देवेन्द्र श्रीधर, श्री एस. एस. आर्य, श्री पी. के. सचदेवा, श्री सतीश भाटिया, श्री अजय भाटिया, सरदार पुष्पेंदर सिंह आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

श्रीमती मीना आर्या, श्री संजय सेतिया, श्रीमती सुनीता चौधरी, श्रीमती स्वर्णा सेतिया, अर्पित चौधरी, हर्षवर्धन आर्य, गौरव आर्य आदि को कार्यक्रम के प्रबंधन में योगदान करने के लिए आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस समारोह में अनेक मूर्धन्य साहित्यकार, वैदिक विद्वान्, कवि, समाजसेवी बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थे। शांतिपाठ के उपरान्त सात्विक एवं स्वादिष्ट प्रीतिभोज की व्यवस्था थी जिसे सभी ने ग्रहण किया। सुंदर व्यवस्थित कार्यक्रम के लिए देश–विदेश के लोगों ने आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी की भूरि–भूरि प्रशंसा की। पूरे कार्यक्रम का आर्य संदेश टी.वी. पर लाइव टेलीकास्ट किया गया।

– सुरेन्द्र चौधरी (सह संपादक, अध्यात्म पथ)

‘वैदिक सार्वदेशिक’ पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशन का स्थान	: दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड, (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–02
प्रकाशन की अवधि	: साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	: प्रति बृहस्पतिवार
मुद्रक का नाम	: प्रो. विट्ठलराव आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
मुद्रक का पता	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–110002
सम्पादक का नाम	: प्रो. विट्ठलराव आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
सम्पादक का पता	: पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम-पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1 प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–110002

मैं प्रो. विट्ठलराव आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण, जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

प्रो. विट्ठलराव आर्य, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक

संस्कृता स्त्री पराशक्तिः ओ३म् संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है

200 वीं
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती
1824-2024

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष
एवं
स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 17वीं पुण्यतिथि के अवसर पर

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

दिनांक : 6 जून (मंगलवार) से 12 जून (सोमवार), 2023 तक
स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, गांव टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

पांच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाइल अपने साथ न लेकर आयें।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, सफेद सूट व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक छात्राएँ 200 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र अपने माता–पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई तक अवश्य जमा करवाएं। सीटें सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस सात दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं। आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अतः आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग कराएँ। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो क्रास चैक 'स्वामी इन्द्रवेश फाण्डेशन' या 'युवा निर्माण अभियान' के नाम से भिजवाने की कृपा करें अथवा नीचे लिखे बैंक खाते में सीधे परिवर्तित कराने का कष्ट करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइण्ड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिये गये दान से कन्या चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

Name - Swami Indervesh Foundation A/C - 2978000100105117 IFSC - PUNB0297800
Bank - PNB Tilaknagar Rohtak

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, धर्म प्रतिष्ठान एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउंडेशन
कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)
सम्पर्क नं.:– 9416630916, 9354840454

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जोधपुर तथा ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में आयोजित होने वाले शिविरों की योजना तैयार करने के लिए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रमुख कार्यकर्ताओं की महत्त्वपूर्ण बैठक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में हुई सम्पन्न

आर्य महासम्मेलन जोधपुर में हरियाणा से हजारों आर्यजन भाग लेंगे

11 जून, 2023 को विशाल आर्य महिला सम्मेलन का रोहतक में होगा आयोजन

6 से 12 जून, 2023 तक 500 कन्याओं का राष्ट्रीय शिविर लगेगा टिटौली में

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 75 युवा निर्माण शिविर एवं 75 कन्याओं के शिविर देशभर में होंगे आयोजित

22 सितम्बर, 2023 को विशाल आर्य महासम्मेलन होगा जीन्द में

सभी कार्यकर्ताओं को उपरोक्त कार्यक्रमों की तैयारी के लिए दिन–रात परिश्रम करने के दिये निर्देश

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर एक लाख आर्य युवकों को आर्य समाज में किया जायेगा दीक्षित

आप इसमें क्या सहयोग करेंगे, कृपया अवश्य बतायें तथा सम्पर्क करें।

गत् 23 अप्रैल, 2023 को सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के पदाधिकारियों की एक महत्त्वपूर्ण बैठक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम टिटौली में स्वामी आर्यवेश जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। बैठक में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जोधपुर को सफल बनाने के लिए विविध प्रान्तों से आर्यजनों को जोधपुर पहुंचाने के लिए तैयार करने और दिल खोलकर आर्थिक सहयोग देने के लिए जिला एवं प्रान्तीय स्तर की बैठकें करने का निश्चय किया गया। इसी प्रकार आगामी ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में कन्याओं तथा बालकों के चरित्र निर्माण तथा युवा निर्माण शिविरों का व्यापक स्तर पर आयोजन करने की योजना भी तैयार की गई और निश्चय किया गया कि आगामी दो वर्षों में एक लाख आर्य युवाओं (युवक/युवतियों) को आर्य समाज से जोड़ा जायेगा। देशभर में 200 विचार गोष्ठियां, सम्मेलन, जन–चेतना यात्राएं, वानप्रस्थ एवं संन्यास की दीक्षाएं तथा जीवनदानी कार्यकर्ताओं को तैयार करने का संकल्प पूरा किया जायेगा।

स्वामी आर्यवेश जी ने एक प्रेस विज्ञप्ति के द्वारा यह घोषित किया कि इस कार्य में देशभर के कर्मठ कार्यकर्ता कमर कसकर जुट जायें और अपनी–अपनी प्रगति तथा कार्यों का विवरण केन्द्रीय कार्यालय को भेजते रहें। स्वामी जी ने कहा कि हरियाणा आर्य समाज का गढ़ माना जाता है। अतः हमारा प्रयास रहेगा कि हरियाणा के प्रत्येक गांव में आर्य समाज, आर्य युवक परिषद् तथा आर्य महिला समाज का गठन अवश्य किया जाये। इसके लिए अलग–अलग टोलियां तैयार की जा रही हैं और विभिन्न कार्यों के संयोजक बनाये जा रहे हैं जो अपने–अपने कार्य को मूर्तरूप देने के लिए संकल्पित होंगे। स्वामी जी ने बताया कि युवाओं के प्रेरणास्रोत त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी आर्य संन्यासी आर्यनेता पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 17वीं पुण्य तिथि पर आगामी 6 से 12 जून तक राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण तथा योग शिविर का आयोजन स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में आयोजित किया जायेगा। जिसका सम्पूर्ण संयोजन एवं नेतृत्व बहन प्रवेश आर्या तथा बहन पूनम आर्या तथा उनकी समस्त कर्मठ कार्यकर्ता बहनों के हाथों में होगा। शिविर के दौरान 11 जून, 2023 को विशाल आर्य महिला सम्मेलन होगा जिसमें 5 हजार महिलाएं भाग लेंगी। इस सम्मेलन में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नारी जाति पर किये गये उपकारों को याद किया जायेगा और महिलाओं को गांव–गांव में महिला आर्य समाज बनाने के लिए प्रेरित किया जायेगा। कन्याओं के अन्य शिविर रठौड़ा, बागपत, झाराखण्ड, राजस्थान आदि प्रान्तों में भी होंगे। हरियाणा के विविध गांव तथा नगरों में भी कन्याओं के शिविरों का आयोजन किया जायेगा। देश की आजादी का अमृत महोत्सव पूरा देश मना रहा है। आजादी के लिए आर्य समाज के अनेक नेताओं ने अपने प्राणों का बलिदान दिया था यह सर्वविदित है। अतः परिषद् ने निश्चय किया है कि ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में 75 युवा निर्माण शिविरों का आयोजन विविध गांव तथा शहरों में किया जायेगा। स्वामी आर्यवेश जी ने हरियाणा के सभी आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं, आर्य समाज के अधिकारियों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा गुरुकुलों के प्रबन्धकों तथा आचार्यों से अपील की है कि वे सभी इस कार्य में अपना योगदान दें। सभी स्कूलों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा विचारधारा पर भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की जायें और प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पारितोषिक दिये जायें। उपरोक्त महत्त्वाकांक्षी योजनाओं को हम सभी लोग मिलकर यदि क्रियान्वित करेंगे तो आर्य समाज का एक बार फिर से डंका बजेगा। आज धार्मिक अन्धविश्वास, जातिवाद, नशाखोरी जिस प्रकार से बढ़ रही है। इनको देखते हुए आर्य समाज की एक बार फिर से आवश्यकता अनुभव हो रही है। आर्य समाज अपने इस दायित्व को पूरी निष्ठा और मिशनरी भावना के साथ निभाने के लिए संकल्पित हो। यही महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। यही ऋषि दयानन्द जी की 200वीं जयन्ती मनाने का एक रचनात्मक कार्य होगा। बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये और अगले दो महीने का पूरा समय देने का संकल्प लिया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : *sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com* वैबसाइट : *www.vedicaryasamaj.com*

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।